जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट), चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान

अनुसंधान प्रायोजना प्रतिवेदन

सा विद्या या विमुक्तये

प्रकाशन

सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्षेत्रीय अन्तः क्रियाएं नवाचार एवं समन्वय प्रभाग–3

आई.एफ.आई.सी., डाईट, चूरू (राज.)

2020–2021

क्रियात्मक अनुसंधान

क्रियात्मक अनुसंधान वार्षिक पत्रिका

मुख्य संरक्षक

माननीय डॉ. गोविन्द सिंह डोटासरा
शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
प्रारम्भिक व माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान सरकार, जयपुर

संरक्षक
श्रीमती अपर्णा अरोरा (I.A.S.)
प्रमुख शासन सचिव
स्कूल शिक्षा, राजस्थान शिक्षा जयपुर

श्री सौरभ स्वामी I.A.S.
निदेशक माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

मुख्य मार्गदर्शक
सुश्री प्रियंका जोधावत RAS
निदेशक
राज.राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद, उदयपुर

संयोजक
श्री रमेश चन्द्र पूनियां
प्राचार्य
जि.शि.प्र. संस्थान (डाईट), चूरू

सह संयोजक
श्री सन्तकुमार दहिया
प्रभागाध्यक्ष
आई.एफ.आई.सी. प्रभाग

सह संयोजक
श्रीमती चन्द्रकला खीचड़,
अमित ढ़ाका
प्रभारी
आई.एफ.आई.सी. प्रभाग

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान विवरणिका सत्र :– 2020–21

क्र•स•	क्रियात्मक अनुसंधान का शीर्षक	अनुसंधान कर्ता का नाम
1	छात्राओं में 'सामाजिक विज्ञान' विषय में शैक्षिक उपलब्धि प्रोन्नत करने का प्रयास।	अंजना चौधरी रा. बा. उ. प्रा. वि., घण्टेल, चूरू
2	विद्यार्थियों के तनाव (Stress) को योगाभ्यास से दूर करने का प्रयास।	सुनील कुमार शर्मा व्याख्याता रा. उ. मा. वि., दूधवाखारा, चूरू
3	गृहकार्य न करने की समस्या समाधान	श्री पूनम चंद मेघवाल व•अ• रा•उ•मा•वि• बालेरा बीदासर, चूरू
4	छात्रों में अनुशासनहीनता की बढ़ती हुई प्रवृति में सुधार लाने का अध्ययन करना।	श्री हेत राम व•अ• रा•उ•मा•वि• लधासर, रतनगढ़
5	विद्यार्थियों का नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित न होने के कारण व उसके निराकरण का एक प्रयास।	श्रीमती बीना कुमारी प्रबोधक शहीद सुमेर सिह रा•उ•प्रा•वि• दूधवा खारा, चूरू
6	विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण अधिगम में वर्णों के शुद्ध उच्चारण के महत्व की समस्याएँ।	श्रीमती शकुन्तला अध्यापक रा•उ•मा•वि• भानीपुरा, सरदारशहर, चूरू
7	विद्यार्थियों के द्वारा पुस्तकालय उपयोग को प्रोत्साहित करने का प्रयास ।	श्री जयप्रकाश अध्यापक रा•उ•मा•वि तेहनदेसर,बीदासर, चूरू
8	छात्र/छात्राओं को पोशाक को नियमित रूप से पहनने के लिए प्रेरित करना।	अमरसिंह व्याख्याता रा.उ.मा.वि., लालासर, चूरू
9	विद्यार्थियों में अग्रेजी विषय के प्रति अरूचि को दूर करने का प्रयास।	श्रीमती रचना, अध्यापिका रा.उ. प्रा. वि. खण्डवा पट्टा, पीथीसर, चूरू
10	रा.मा. वि. रायपुरिया में विद्यालय परिसर सौन्दर्यकरण करने का प्रयास	श्री ओम प्रकाश भाकर अध्यापक रा•मा•वि•रायपुरिया, चूरू, जिला– चूरू
11	अध्यापको में दैनन्दिनी प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने का प्रयास	जगवीर सिंह पूनिया अध्यापक रा•उ•प्रा•वि•मघाउ,राजगढ चूरू
12	''विद्यार्थियों को विज्ञान विषय में चित्र स्वच्छ एवं स्पष्ट बनाने का एक प्रयास'	श्री मुकेश चंद मीना व•अ• रा•उ•मा•वि• टिडियासर, रतनगढ चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

"छात्राओं में सामाजिक विज्ञान' विषय में शैक्षिक उपलबिध प्रोन्नत करने का प्रयास।"

अनुसंधान कर्ता

अंजना चौधरी, रा. बा. उ. प्रा. वि., घण्टेल, चूरू

1. शोध का शीर्षक :–

छात्राओं में 'सामाजिक विज्ञान' विषय में शैक्षिक उपलब्धि प्रोन्नत करने का प्रयास।

2 शोध समस्या की पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्त्व :–

रा. बा. उ. प्रा. वि. घण्टेल की कक्षा 6 की छात्राओं के व्यवहारगत आचरण तथा पोर्टफोलियो दस्तावेज देखने पर पाया गया कि उनकी शैक्षिक उपलब्धि अन्य विषयों की तुलना में सामाजिक विज्ञान विषय में बहुत कम है। सामाजिक विज्ञान विषय का अध्ययन कक्षा 6 से शुरू होता है तथा यही बच्चे आगे जाकर समाज का निर्माण करते हैं अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि इनमें सामाजिक व नैतिक मूल्यों का विकास हो। सामाजिक विज्ञान एक ऐसा विषय है जिसका संबन्ध लगभग सभी विषयों को पढ़कर छात्र अपने सामाजिक मूल्यों को विकसित कर सकता है।

3 समस्या सीमांकनः–

अनुसंधान रा. बा. उ. प्रा. वि. घण्टेल की कक्षा 6 की छात्राओं तक सीमित है।

4 शोध उद्देश्य :–

(1) सामाजिक विज्ञान विषय में छात्राओं की रूचि कम होने के कारण जानना।
(2) छात्राओं में सामाजिक विज्ञान विषय में रूचि को बढ़ाने के प्रयास करना।

5 क्षेत्र :–

अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

6 समस्या के कारण व साक्ष्य :–

समस्या के कारण	साक्ष्य
(1) अधूरा गृहकार्य	(1) कार्य पुस्तिका
(2) कक्षा टेस्ट में रूचि न होना	(2)पोर्टफोलियो
(3) छात्रों का आपस में मिलकर न रहना	(3)निरीक्षण – विधि
(4) बड़ों का आदर सत्कार न करना	(4)अवलोकन द्वारा
(5) अधिकार, कर्तव्य, संस्कृति, धरोहर, राज्य राष्ट्र आदि के बारे में सामान्य जानकारी न होना।	(5) प्रश्नोत्तर द्वारा

7 परिकल्पना :–

(1) विद्यालय मे आवश्यक सहायक सामग्री उपलब्ध कराकर विद्यार्थियों से उसका अधिकतम उपयोग कराया जाये।

(2) विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान विषय का महत्व बताना जिससे उनमें रूचि पैदा हो सके।

(3) विद्यार्थियों के सामने आ रही कठिनाईयों का उचित मार्गदर्शन करना।

(4) विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रोत्साहित करना।

8 परीक्षण हेतु कार्य योजना

क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
(1) सामाजिक विज्ञान विषय में काम आने वाली सहायक सामग्री की सूची तैयार करना	विचार विमर्श करके	पाठ्यक्रम व पाठ्य पुस्तक	7 दिन
(2) क्रियात्मक अनुसंधान हेतु सहायक सामग्री का चयन करना आधार पर	पाठ्य सामग्री के	समय सारणी	5 दिन
(3) सहायक सामग्री का कक्षा मे प्रदर्शन करना	गतिविधि द्वारा	सूची व सारणी	5 दिन
(4) भूगोल विषय में मानचित्र व ग्लोब का अधिक उपयोग करना।	प्रदर्शन विधि	मानचित्र व ग्लोब	2 दिन
(5) स्वयं आदर्श बनकर बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करना उदाहरण विधि	व्याख्यान व	समय सारणी	1 दिन
(6) बच्चों को परिवार व समाज के बारे में मौखिक प्रश्न पूछकर।	प्रश्नोतर विधि	पेपर पेन्सिल	1 दिन
(7) विद्यालय में बाल संसद का गठन करके संसद के बारे में सामान्य जानकारी देना।	क्रियाकलाप विधि	समय सारणी	1 दिन

9 दत्त संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर :–

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	योग
मेधावी	7–10	01	01
औसत	4–6	06	06
कमजोर	1–3	08	08

दत्त संकलन अनुसंधान पश्चात की स्थिति के आधार पर :–

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	योग
मेधावी	7–10	06	06
औसत	4–6	07	07
कमजोर	1–3	02	02

10 दत्त संकलन का विश्लेषण :–

1. इतिहास में प्राचीन औजारों के बारे में पढ़ाते समय जब बच्चों को चित्र–पोस्टर व मोबाईल द्वारा दिखाए गये तो बच्चे रूचिपूर्ण सीख गये।
2. भूगोल में अक्षांश व देशान्तर जब ग्लोब द्वारा समझाए गये तो छात्र रूचि लेकर सीख रहे थे।
3. राजनीति– विज्ञान पढाते समय जब बाल संसद द्वारा संसद के बारे में जानकारी दो तो बच्चे बेहतर सीखें।

11 निष्कर्ष :–

(1) सहायक सामग्री के प्रयोग से बच्चों में उत्साह पैदा होता है इससे बच्चे बेहतर सीखते हैं।
(2) बच्चे स्वयं मानचित्र व ग्लोब को उपयोग में लेना सीख गये थे।
(3) प्रश्नोत्तर व व्याख्यान विधि द्वारा बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास पाया गया।
(4) अवलोकन द्वारा पाया गया कि बच्चों में आज्ञा पालन व आदर सत्कार का भाव बढ़ा है।

अंजना चौधरी
रा. बा. उ. प्रा. वि., घण्टेल

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

" विद्यार्थियों के तनाव (Stress) को योगाभ्यास से दूर करने का प्रयास।"

अनुसंधान कर्ता

श्री सुनील कुमार शर्मा व्याख्याता रा. उ. मा. वि., दूधवाखारा, चूरू

अनुसंधान का शीर्षक :–

रा. उ. मा. वि., दूधवाखारा (चूरू) कक्षा '10 के विद्यार्थियों के तनाव (Stress) को योगाभ्यास से दूर करने का प्रयास।

सीमांकन :–

रा. उ. मा. वि. दूधवाखारा कक्षा–10 कुल 40 विद्यार्थी।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि :–

1. वर्तमान में इस भौतिक युग में तकनीकी व आर्थिक पक्ष अधिक प्रभावी होने सामाजिक व अप्रत्यक्ष प्रभाव किशोरावस्था पर अधिक तनाव (Stress) के रूप में परिवर्तित हो रहा है। विद्यालय में विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों में तनाव के लक्षण निम्नलिखित रूप में देखे जा सकते हैं।
   (– कक्षा में गुमशुम रहना – एकाग्रता में कमी – भयग्रस्त – अधिगम उपलब्धि न्यून)

2. तनाव के कारण बालक का मानसिक स्वास्थ्य रूग्ण होता है, एकाग्रता की कमी से याददाश्त कमजोर होती है। जिससे अधिगम प्रक्रिया पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अन्ततः विद्यार्थी का व्यक्तिगत विकास अवरूद्ध हो जाता है। मनौविज्ञान की प्रमाणिक पुस्तकों, टेलीविजन पर प्रसारित कार्यक्रमों एवं स्वअनुभव के अवलोकन से उसे यह प्रतीत होता है कि योगाभ्यास के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के तनाव (Stress) में कमी आती है। इस कारण कक्षा –10 के विद्यार्थियों के लिए योगाभ्यास की श्रृंखला आयोजित कर प्राप्त सांख्यिकी आंकड़ो के आधार पर निष्कर्ष निकालने हेतु क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता है। उक्त अनुसंधान के लिए कक्षा–10 का चयन किया गया है क्योंकि उक्त विद्यार्थी किशोरावस्था से गुजर रहे हैं जिनमें शारीरिक, भावनात्मक, संवेगात्मक परिवर्तन की तीव्रता अधिक होने से (Stress Level) अधिक होता है।

शोध उद्देश्यः–

विद्यार्थियों के तनाव का पता लगाने एवं योगाभ्यास के द्वारा तनाव (Stress) पर असर की तुलना करना

शोध समस्या के संभावित कारण एवं साक्ष्य :–

क्र. सं.	कारण	साक्ष्य
1	अधिगम स्तर न्यूनः– कक्षा–10 के 12 छात्रों का अधिगम स्तर अपेक्षाकृत न्यून है।	उक्त छात्र पाठ्य सामग्री के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करते हैं फिर भी वांछित परिणाम नहीं।
2	सत्र पर्यन्त शैक्षणिक उपलब्धि उच्च स्तरीय परंतु परीक्षा में प्राप्तांक अपेक्षाकृत कम।	बोर्ड परीक्षा का भय, परिणाम के प्रति नकारात्मक विचार।
3	सामाजिकता की कमी (8 विद्यार्थियों में)	कक्षा–कक्ष में चुप रहना, खेलकूद में भी भाग नहीं लेना।

क्रियात्मक परिकल्पना :– योगाभ्यास से तनाव में कमी आती है एवं शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य में संतुलन स्थापित होता है।

परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र. सं.	कार्य योजना के बिन्दु	क्रियापद	साधन	अपेक्षित सुधार
1.	विद्यालय परिसर में विद्यार्थियों को योग का महत्व बताना	अ) प्रार्थना स्थल पर प्राणायाम करवाने के उपरान्त प्रार्थना (ब) सप्ताह में दो दिन योगासन का अभ्यास	मधुर संगीत श्रृव्य साधन प्रोजेक्टर	एकाग्रता में वृद्धि शारीरिक दक्षता में वृद्धि, मानसिक तनाव से निजात, प्रसन्नचित भाव से अधिगम वृद्धि
2.	विद्यार्थी स्तर पर	ध्यानयोग, प्राणायाम, योगासन का महत्व बताकर घर पर निरन्तर योगाभ्यास के लिए प्रेरित करना।	टी. वी.	नकारात्मक विचारों में कमी, एकाग्रता में वृद्धि
3.	अभिभावक स्तर पर	घर पर सभी सदस्य प्राणायाम मे निरंतरता हेतु प्रेरित करें।		छात्रों में उत्साह वर्धन, स्वास्थ्य सुधार, मानसिक परिपक्वता, प्रसन्नचित स्वभाव से कार्य के प्रति लगन का भाव उत्पन्न

दत्त विश्लेषण एवं सांख्यिकी :–

अनुसंधान से पूर्व

क•स•	वर्गीकरण	छात्र	छात्रा	योग
1	तनाव स्तर उच्च	05	08	13
2	मध्यम	13	09	22
3	नगण्य	01	04	05

अनुसंधान कार्य योजना के उपरान्त

वर्गीकरण		छात्र	छात्रा	योग
तनाव स्तर	उच्च	00	00	00
	मध्यम	02	01	03
	उच्च	17	20	37

निष्कर्ष :–

कक्षा 10 के विद्यार्थी योगाभ्यास से पूर्व परीक्षा परिणाम कक्षा कक्ष में सक्रिय भागीदारी में कमी एवं स्वास्थ्य संबन्धित समस्याओं से अधिगम प्रभावित होने से तनावग्रसित थे। कुछ छात्र तनाव से कुंठित होकर सामाजिक व्यवहार से विरक्त थे।

योगाभ्यास के बाद उपर्युक्त सभी क्षेत्रों से बहुत अधिक सकारात्मक परिवर्तन हुआ। छात्रों की एकाग्रता में वृद्धि, याददाश्त वृद्धि, शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार हाने से सकारात्म्क दृष्टिकोण उत्पन्न होने से तनाव पूणर्तया दूर हो गया है। अतः क्रियात्मक परिकल्पना पूर्णतया स्वीकृत की जाती है एवं व्यक्तिगत विकास में योग की महत्ता सिद्ध होती है।

शैक्षणिक निहितार्थ :–

विद्यालय का स्वास्थ्य विद्यार्थियों के बहुआयामी स्वास्थ्य में निहित होता है।

योगाभ्यास प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप में विद्यार्थियों को तनाव मुक्ति, सम्पूर्ण व्यक्तिगत विकास के लिए सहायक है।

संदर्भ सूची :–

डॉ. महरावत एस. के. (2014) योग ही जीवन है।

बनर्जी आशुतोष (2002) शिक्षा मनोविज्ञान एवं योग

सुनील कुमार शर्मा
व्याख्याता
रा. उ. मा. वि., दूधवाखारा

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

" गृहकार्य न करने की समस्या समाधान "

अनुसंधान कर्ता

श्री पूनम चंद मेघवाल व•अ• रा•उ•मा•वि• बालेरा बीदासर,चूरू

1 अनुसंधान का शीर्षक :–

गृहकार्य न करने की समस्या रा. उ. मा. विद्यालय, बालेरा, बीदासर (चूरू) के कक्षा–8 के (विद्यार्थियों द्वारा गृहकार्य समय पर न करने के कारण व निराकरण करने का एक प्रयास) जिसमें कक्षा–8 के 25 छात्रों में 15 छात्राएं व 10 छात्रों द्वारा गृहकार्य न करने के लिए।

2 शोधकर्ता के उद्देश्य :–

(1) विद्यार्थियों को गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना।

(2) विद्यार्थियों को गृहकार्य नियमित रूप से करने के लाभ समझाना।

(3) गृहकार्य को समय पर करने से होने वाले महत्व को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बताना।

गृहकार्य समय पर न करने के कारण :– बच्चों द्वारा गृहकार्य समय पर न करने के निम्नलिखित कारण होते हैं जो इस प्रकार हैं।

1. गृहकार्य रूचिपूर्ण न होना :– बच्चों को दिया जाना वाला गृहकार्य रूचि के अनुरूप न होने के कारण बच्चे समय पर नहीं करते हैं।
2. समझ का अभाव :– बच्चों को गृह कार्य के महत्व का ज्ञान न होने के कारण बच्चे गृहकार्य को करने में रूचि नहीं दिखाते जिसके कारण बच्चे गृहकार्य को समय पर नहीं करते हैं।
3. गृहकार्य के महत्व का ज्ञान न होना :– बच्चों को गृहकार्य के महत्व का ज्ञान न होने के कारण बच्चे गृहकार्य को समय पर नहीं करते हैं।
4. गृहकार्य की अधिकता :– बच्चों को सभी विषयों का गृहकार्य होने के कारण बच्चों में गृहकार्य के प्रति बोझ बढ़ जाता है। जिसके कारण बच्चे सभी विषयों का गृहकार्य समय पर नहीं कर पाते है।
5. अभिभावकों का असहयोग :– सभी अभिभावकों द्वारा बच्चों पर ध्यान नहीं दिया जाता है जो अभिभावक बच्चों पर ध्यान व सहयोग प्रदान नहीं करते हैं। उनके बच्चे गृहकार्य को समय पर नहीं कर पाते हैं। इस कारण वे गृहकार्य मे पिछड़ जाते हैं।
6. गृहकार्य को नियमित करने का अभाव :– सभी बच्चे गृहकार्य को नियमित नहीं करते हैं। जिससे बच्चों का गृहकार्य इकट्ठा हो जाता है तब सम्पूर्ण गृहकार्य एक साथ करने में परेशानी आती है।
7. विद्यालय नियमित आने का अभाव :– जो बच्चे नियमित विद्यालय नहीं आते हैं उनका गृहकार्य इकट्ठा हो जाता है तब उनके द्वारा सम्पूर्ण कार्य समय पर नहीं होने के कारण वे गृहकार्य करने में पिछड़ जाते हैं, तब वे गृहकार्य को नहीं करते हैं।
8. अन्य कारण :– बच्चों द्वारा गृहकार्य समय पर न करने के अन्य कारण हो सकते हैं। विद्यार्थी के पूर्ण रूप से स्वस्थ न होने के कारण भी बच्चे गृहकार्य को समय पर नहीं कर पाते हैं।

3 समस्या की पृष्ठभूमिः–

जब मैंने कक्षा–8 में गृहकार्य पुस्तिका का निरीक्षण किया तो कुछ बच्चों द्वारा गृहकार्य पूर्ण किया हुआ नहीं मिला तो मैंने गृहकार्य पूर्ण करवाने के विषय पर विचार किया तथा मैंने आत्मचिंतन किया कि बच्चों को गृहकार्य समय पर पूर्ण करवाने हेतु प्रेरित किया जाए तथा उन्हें गृहकार्य के महत्व को बताया जाए। मैंने सभी बच्चों को गृहकार्य पूर्ण करने के महत्व के बारे में बताया कि गृहकार्य समय पर पूर्ण करने से छात्र को किये हुए कार्य को याद करने में मदद मिलती है तथा लेखन कार्य में सुधार होगा। लेखन कार्य में आयी हुई अशुद्धियों को शिक्षक द्वारा गृहकार्य जांच करते समय दूर किया जाता है। जिससे वर्णो/शब्दों को शुद्ध लिखने की आदत विकसित होती है। गृहकार्य नियमित करने से गृहकार्य याद हो जाता है जिसके द्वारा परीक्षा के समय पेपर आसानी से हल करने में मदद मिल सकती है। उन्हें परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद मिलती है।

4 समस्या सीमांकन :–

यह अनुसंधान रा.उ.मा. वि. बालेरा (बीदासर) की कक्षा–8 की छात्राओं तक सीमित है।

5. शोध उद्देश्यः–

(1) गृहकार्य के प्रति बच्चों में रूचि उत्पन्न करना।

(2) गृहकार्य के महत्व को बताना।

6 क्षेत्रः–

अनुसंधान कार्य द्वारा किया गया शोध शैक्षणिक विषय के अन्तर्गत आता है।

7 शोध समस्या के कारण एवं साक्ष्य :–

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
(1)	कुछ बच्चे गृहकार्य पूर्ण नहीं कर रहे थे	कार्य पुस्तिका

बच्चों द्वारा गृहकार्य समय पर करवाने के लिए अपनाए जाने वाले उपाय :–

(क) बच्चों को गृहकार्य का महत्व बताना :– सबसे पहले शिक्षक द्वारा गृहकार्य के महत्व के बारे में बताना और उनको बताना कि गृहकार्य समय पर करने से गृहकार्य याद हो जाता हैं जिसके कारण परीक्षा पत्र हल करने में आसानी होती है।

(ख) गृहकार्य के प्रति बच्चों में रूचि उत्पन्न करना :– बच्चों में गृहकार्य के प्रति रूचि उत्पन्न कर बच्चों को गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना जिससे बच्चे गृहकार्य समय पर करने लग जायेंगे।

(ग) अभिभावकों को बच्चों के गृहकार्य में सहयोग के लिए प्रेरित करनाः– अभिभावक बच्चों को गृहकार्य में सहयोग करे और उन्हें गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए जिससे बच्चे गृहकार्य समय पर करने लगें।

(घ) बच्चों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना :– बच्चों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रेरित किया तथा बताया कि समय पर आने से रोजाना का गृहकार्य समय पर होता है जिससे बच्चे गृहकार्य समय पर पूरा कर सकते है।

(ड) गृहकार्य को रूचिकर बनाना :– शिक्षकों द्वारा गृहकार्य को रूचिकर बनाना चाहिए जिससे बच्चे में गृह कार्य के प्रति रूचि जागृत होगी जिससे बच्चे गृहकार्य को समय पर कर सकें।

(च) गृहकार्य पूरा करने वाले छात्रों को पुरस्कार देना :– जो बच्चे समय पर गृहकार्य पूरा करते हैं उन बच्चों को पुरस्कृत करने से बच्चे गृहकार्य को समय पर करने के लिए प्रेरित होंगे और अन्य विद्यार्थी उनको देखकर गृहकार्य समय पर पूरा करने के लिए प्रेरित होंगे।

(छ) अन्य उपाय :– बच्चों को अन्य उपायों में बच्चों को नियमित विद्यालय आना व स्वास्थ्य का ध्यान रखना तथा रोजाना गृहकार्य को समय पर पूरा करने के लिए प्रेरित करना तथा समय पर गृह कार्य की जांच करना चाहिए।

8 क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

(i) जो बच्चे गहकार्य समय पर पूरा करके नहीं लाते है उन्हें प्रेरित करके समय पर गृहकार्य करने के लिए प्रेरित करना।

(ii) विद्यालय में आ रही समस्याओं का उचित मार्गदर्शन करना।

(iii) अभिभावकों को बच्चों द्वारा गृहकार्य करवाने के लिए प्रेरित करना।

9 क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र. सं.	कार्य योजना बिंदु	कार्य जो करना है	साधन	समयावधि
1.	पूर्व परीक्षा/वर्तमान स्थिति का आंकलन	कक्षा–कक्ष में दिए गये गृह कार्य का अवलोकन	कॉपियां	06 दिन
2	क्रिया पक्ष का क्रियान्वयन शिक्षण योजना शिक्षण सहायक सामग्री	गतिविधि प्रदर्शन विधि द्वारा	सूची व सारणी	04 दिन
3	स्वयं आदर्श बनकर बच्चों में गृहकार्य करने की आदत का विकास किया गया	व्याख्यान व उदाहरण विधि द्वारा	पेपर, पेंसिल	01 दन
4	पश्च परीक्षण/ परिवर्तन आंकलन	बच्चों के गृहकार्य में सुधार हुआ	कॉपिया	02 दिन
5	दत्त विश्लेषण व सांख्यिंकी	बच्चों का मूल्यांकन किया	कॉपिया	02 दिन

अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	योग
मेधावी	7–10	01	01
औसत	4–6	06	06
कमजोर	1–3	08	08

अनुसंधान पश्चात की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	योग
मेधावी	7–10	06	06
औसत	4–6	07	07
कमजोर	1–3	02	02

9 निष्कर्ष :– बच्चों को गृहकार्य के लिए प्रेरित करने व गृहकार्य का महत्व बताने के कारण बच्चों में काफी सुधार आया।
बच्चे अब गृहकार्य में रूचि लेने लगे तथा गृहकार्य को समय पर करने लगे।

श्री पूनम चंद मेघवाल व•अ•
रा•उ•मा•वि• बालेरा बीदासर,चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

"छात्रों में अनुशासनहीनता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति में सुधार लाने का अध्ययन करना।"

अनुसंधान कर्ता

श्री हेतराम व•अ• रा•उ•मा•वि• लधासर, रतनगढ़

1 शोध का शीर्षक :–

(i) समस्या :–
छात्रों में अनुशासनहीनता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति में सुधार लाने का अध्ययन करना।

(ii) समस्या सीमांकन :–
रा.उ.मा.वि., लघासर (रतनगढ़) के कक्षा 9 के छात्रों में अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति का बढ़ना।

2. संभावित कारण :–

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1	शिक्षक का छात्रों के द्वारा अनुशासन भंग करने पर ध्यान न देना	कक्षा का अवलोकन करने पर
2	छात्रों को उचित मार्गदर्शन न मिलना	शिक्षक का अनुभव
3	पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अभाव	शिक्षक का अनुभव
4	शिक्षकों का अभाव	अवलोकन
5	ग्रामीण परिवेश का दूषित होना	अवलोकन

3 क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

(i) शिक्षक छात्रों के अनुशासन भंग करने पर ध्यान देकर अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति को कम करना

(ii) छात्रों को मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा नियंत्रण में रखना।

(iii) पाठ्य सहभागी क्रियाओं की उचित व्यवस्था करना।

(iv) छात्रों को अनुशासन के भविष्य में होने वाले लाभ/हानि के प्रति जागरूक करना।

(v) विद्यालय समय को कम करना।

4 क्रियात्मक अभिकल्प :–

क्र.सं.	क्रियात्मकता /क्रियाएं	विधि	सामग्री	दिन
1	अनुशासन भंग करने वाले छात्रों की सूची तैयार करना	सहयोगियों से विचार विमर्श द्वारा	सूची	2 दिन
2	अनुसंधान हेतु अनुशासन भंग करने वाले छात्र को दण्ड देना	सहयोगियों से विचार विमर्श द्वारा	सूची	7 दिन
3	अनुशासित छात्रों को पुरूस्कृत करना	सहयोगियों से विचार विमर्श द्वारा	सूची	7 दिन
4	शिक्षक अभिभावकों व विद्यार्थियों को अनुशासन का महत्व बताने के लिए तथा उन्हें अनुशासन हेतु प्रेरित करना	बैठकों का आयोजन	व्यवस्था करना	7 दिन

परिणाम :–

परिकल्पना में वर्णित उपायों से अनुशासनहीनता की प्रवृत्ति में कमी आई है। अतः परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है।

सामान्य निष्कर्ष :–

परिणामों के अवलोकन से स्पष्ट है कि परिकल्पना के रूप में प्रयुक्त सुझावों को लागू करने पर छात्रों द्वारा की जाने वाली क्रियाएं प्रभावित हुई हैं तथा मनोवैज्ञानिक तरीके, प्रेम व स्नेह द्वारा इसमें सकारात्मक सुधार किया जा सकता है

श्री हेतराम व•अ•

रा•उ•मा•वि•, लधासर,रतनगढ़

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

"विद्यार्थियों का नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित न होने के कारण व उसके निराकरण का एक प्रयास"

अनुसंधान कर्ता

श्रीमती बीना कुमारी प्रबोधक, शहीद सुमेर सिह रा•उ•प्रा•वि• दूधवाखारा, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान

1. शीर्षक :– शहीद सुमेरसिंह रा. उ. प्रा. वि., दूधवाखारा (चूरू) के कक्षा–4 में विद्यार्थियों का नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित न होने के कारण व उसके निराकरण का एक प्रयास।

शोध :– समस्या की पृष्ठभूमि, आवश्यकता एवं महत्व – आज के युग में पढ़ना जीवन के लिए बहुत जरूरी है। मैंने पाया व देखा कि स्थानीय विद्यालयों के छात्र व छात्राएं नियमित रुप से विद्यालय नहीं आते हैं। जैसा कि कहा गया है कि बिना पढ़े मनुष्य एक बिना पूँछ के पशु के समान होता है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। लेकिन इसकी सार्थकता तब सिद्ध होगी जब छात्रों को नियमित विद्यालय भेजा जाए। कुछ छात्र व छात्राएं पारिवारिक कारणवश या अन्य कई परिस्थितियों के कारण निरन्तर विद्यालय नही आ पाते हैं। इसमें छात्राओं के साथ मुख्य कारण जेण्डर संवेदनशीलता भी है जिसके कारण बच्चों का सर्वांगिण विकास एक विकट समस्या है। हर व्यक्ति को शिक्षित होने की आवश्यकता है। हर एक बच्चा पढ़ेगा तभी तो भारत उन्नति की राह पर आगे बढ़ पायेगा। ि ाक्षा संस्थान और समाज को भी निरन्तर कोशिश करनी चाहिए कि उनके गली, मोहल्ले में हर एक बच्चा स्कूल की ि ाक्षा से वंचित ना रहे। देश विकास और उन्नति तभी करेगा जब उसका हर नागरिक शिक्षित हो। ये तभी संभव होगा जब हम एक शोधकर्ता के रूप में कार्य करते हुए समाज को जागृत कर हर बच्चे को विद्यालय तक पहुंचाए।

2. समस्या सीमांकन :– (i) श. सु. सिंह, रा. उ. प्रा. बा. वि., दूधवाखारा
(ii) कक्षा–4
(iii) छात्र–03, छात्रा–08 कुल– 11

3. शोध उद्देश्य :– (i) बच्चों के भीतर विचार और कर्म की स्वतंत्रता विकसित करना, दूसरों के कल्याण और उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता पैदा करना और बच्चों को नई परिस्थितियों के प्रति लचीले और मौलिक ढंग से पेश आने में मदद करना।
(ii) विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए।
(iii) बच्चों में जागरूकता लाना व रूचि पैदा करना।
(iv) सुधार की भावना का विकास करना।
(v) डर व संकोच की प्रवृति को दूर कर अपनी क्षमता का विकास करना।

4. क्षेत्रः– शैक्षिक

5. शोध समस्या के कारण व साक्ष्य :–

क्र.सं	कारण	साक्ष्य
1	अभिभावकों का घरेलू कार्य में लगना	छात्रों से बातचीत द्वारा
2	घरेलू हिंसा	पड़ौसियों से बातचीत
3	शैक्षिक वातावरण में नीरसता	पोर्ट फोलिया फाइल देखकर

6. क्रियात्मक परिकल्पना :–
(i) छात्रों की उपस्थिति नियमित करने का प्रयास।
(ii) विभिन्न परिस्थितियों से शिक्षण में रूचि उत्पन्न करने का प्रयास

8 क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र.सं.	कार्य योजना के बिन्दु	साधन / उपकरण	अपेक्षित समयावधि
1	शिक्षण कार्य को सहायक समग्री द्वारा रूचिकर बनाना	सहायक सामग्री	4 दिन
2	अभिभावकों को प्रेरित करना	चर्चा	4दिन
3	नियमितता से संबन्धित प्रेरक प्रसंग लेकर बच्चों को प्रोत्साहित करना	प्रेरक प्रसंग	4 दिन
4	खेल–खेल से पढ़ने हेतु प्रेरित करना	खेल	3 दिन

10 दत्त संकलन अनुसंधान पूर्व की स्थिति के आधार पर

क्र.सं.	वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	कुल
1	मेघावी	7–10	01	01
2	औसत	4–6	06	06
3	कमजोर	1–3	04	04

11 अनुसंधान पश्चात की स्थिति के आधार पर

क्र.सं.	वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्रा	कुल
1	मेघावी	7–10	06	06
2	औसत	4–6	04	04
3	कमजोर	1–3	01	01

. 11 दत्त संकलन का विश्लेंषण :–.

1. प्रेरक प्रसंग सुनाऐ गये तो बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आने लग गए।
2. अभिभावको से चर्चा कर जब समझाया गया तो अभिभावक नियमित रूप से विद्यालय भेजने के लिए सहमत हो गए।
3. शिक्षण की सहायक सामग्री से प्रेरित व रूचि लेकर विद्यार्थी नियमित आने लग गए।
4. खेल माध्यम से नियमित विद्यालय आने लगे।

12 निष्कर्ष :–.

1. सहायक सामग्री से बच्चों में उत्साह पैदा होता है।
2. अभिभावकों का सहयोग मिलने लग गया था।
3. बच्चे नियमित विद्यालय आने लग गये थे।
4. अवलोकन से पाया गया बच्चे नियमित विद्यालय आकर रूचिपूर्वक शिक्षण कार्य कर रहे थे।

श्रीमती बीना कुमारी प्रबोधक
शहीद सुमेर सिह रा•उ•प्रा•वि• दूधवाखारा, चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

"विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण अधिगम में वर्णों के शुद्ध उच्चारण के महत्व की समस्याएँ"

अनुसंधान कर्ता

श्रीमती शकुन्तला अध्यापक रा•उ•मा•वि• भानीपुरा, सरदारशहर,चूरू

1 शोध शीर्षकः–

विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण अधिगम में वर्णों के शुद्ध उच्चारण के महत्व की समस्याएँ।

2 प्रस्तावना :–

हिन्दी शिक्षण अधिगम में विद्यार्थियों के वर्णों के शुद्ध उच्चारण का विशेष महत्व है। कहा भी गया है पक्के या चिकने घड़े पर मिट्टी नहीं लगती है, अर्थात बालक का अशुद्ध उच्चारण उसके आगामी कक्षाओं में शुद्ध उच्चारण के लिए विकट समस्या हो जाएगी। विषय का अध्ययन करते समय अशुद्ध उच्चारण का सामना करना पड़ता है।

3 शोध समस्या की पृष्ठभूमि :–

रा. उ. मा. वि., भानीपुरा, सरदारशहर के कक्षा – 6 के छात्रों की परिकल्पना की गई जो उच्चारण संबन्धी है। छात्रों के उच्चारण की अशुद्धता को दूर करना है।

4 समस्या सीमांकन :–

कक्षा – 6 के विद्यार्थियों के उच्चारण संबन्धी समस्या है।

5 शोध के उद्देश्य :–

1. विद्यार्थियों के पुस्तक के उच्चारण संबन्धी समस्या को दूर करना।
2. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि को बढ़ाना है।
3. विद्यार्थियों का नियमित गृहकार्य को बढ़ाना है।
4. विद्यार्थियों की पुस्तक उच्चारण अशुद्धता को दूर करके प्रोत्साहित करना व रूचि बढ़ाना है।
5. विद्यार्थियों की उच्चारण अशुद्धता को दूर करने के लिए अभिभावकों की सहभागिता को बढ़ाना है।

6 क्षेत्र :–

पुस्तक की उच्चारण समस्या को दूर करना है। शैक्षणिक सम्बन्धित उच्चारण समस्या है।

समस्या के कारण	उच्चारण अशुद्धता संबन्धी प्राप्त साक्ष्य
1 गृहकार्य संबन्धित अधूरे गृहकार्य को पूरा करना	इसके साक्ष्य, कॉपी, कार्य पुस्तिका आदि
2 आस–पास व आपस में चर्चा करना	यह विचार अवलोकन के माध्यम से पता चलता है
3 अभ्यास द्वारा सीखना है।	करके सीखने के सहयोग के लिए प्रोत्साहन मुख्य है।

6 परिकल्पना :–

1. विद्यार्थियों को मातृभाषा, ग्रामीण परिवेश में वर्णों का शुद्ध उच्चारण कर सकेंगे।
2. शुद्ध रूप से वर्णों को लिख सकेंगे।
3. वर्णो के मेल से अक्षरों का निर्माण कर सकेंगे।
4. गृहकार्य पूर्ण करने से शैक्षणिक कौशल का विकास हो सकेगा।

6. क्रियात्मक परिकल्पना का परीक्षण हेतु कार्य योजना

क्र.सं.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु उच्चारण संबन्धी दूर करना	पुस्तक उच्चारण विधि	कार्य पुस्तिका, पुस्तक	6 दिन
2	क्रियात्म्क अनुसंधान में सहायक सामग्री का चयन करना	एक पृष्ठ उच्चारण अशुद्धता को दूर करना गतिविधि द्वारा	पुस्तक, वर्णो का संकलन सामग्री चार्ट	6 दिन
3	उच्चारण अशुद्धता को दूर करने के लिए अभ्यास करना	अभ्यास विधि	लिंग्वाफोन, लिंग्वा लैब	3 दिन

क्र.सं.	क्रियाएं	विधि	सामग्री	अवधि
1	क्रियात्मक अनुसंधान हेतु उच्चारण संबन्धी दूर करना	के लिए अभ्यास करना विधि	कार्य पुस्तिका	6 दिन
2	क्रियात्म्क अनुसंधान में सहायक सामग्री का चयन करना	एक पृष्ठ उच्चारण अशुद्धता को दूर करना गतिविधि द्वारा	पुस्तक, वर्णो का संकलन सामग्री चार्ट	6 दिन
3	उच्चारण अशुद्धता को दूर करने के लिए अभ्यास करना	उच्चारण विधि	लिंग्वा लैब	3 दिन

7. दत्त संकलन :–

अनुसंधान से पूर्व की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्र	छात्रा	कुल
मेधावी	7–10	01	02	03
औसत	4–6	02	02	04
कमजोर	1–3	05	10	15

अनुसंधान के पश्चात की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	अंकानुसार	छात्र	छात्रा	कुल
मेधावी	7–10	03	03	06
औसत	4–6	02	05	07
कमजोर	1–3	03	06	09

1. कक्षा–6 के छात्र/छात्राओं को प्रतिदिन लिखने वाले शब्दार्थों का अध्ययन किया गया।
2. अनुसंधान के कौशल उपचारात्मक जांच सुधार, आंकलन किया गया।
3. उच्चारित वर्ण न लिखने पर कार्य करवाया गया।
4. शब्दार्थ सही न लिखने पर कार्य करवाया गया।
5. जांच करके पुनः लिखने का अभ्यास करवाया गया।

8. अनुसंधान के पूर्व की स्थिति व अनुसंधान के पश्चात की स्थिति के आधार पर विश्लेषणः–

1. अनुसंधान से पूर्व ही छात्र/ छात्राऐं औसत श्रेणी के थे। ज्ञान में अभिवृद्धि से छात्र/छात्राएं मेघावी श्रेणी में पहुंच गए।
2. अनुसंधान से पूर्व कमजोर श्रेणी के आठ छात्र/छात्रा थे। अनुसंधान के पश्चात इनकी संख्या मात्र नौ रह गई।
3. छात्र/ छात्राओं की अध्ययन प्रक्रिया रूचिकर होनी लगी।
4. भाषिक ज्ञान से परिपक्वता आने लगी।

9. निष्कर्ष :–

1. उपचारात्मक शिक्षण, कठिन वाचन व लिखित अभ्यास से पश्च परीक्षण के परिणाम प्राप्त हुए।
2. अधिगम सरल और सुगम होने लगा, पद्यांशों का अर्थ लगने लगा।
3. हिन्दी भाषा के शब्द कोष में वृद्धि हुई तथा छात्र/ छात्राओं में आत्मविश्वास का विकास हुआ।

10..सुझाव :– कक्षा–6 में शब्दार्थ याद करवाकर प्रतिदिन कक्षा कार्य को कॉपी में लिखवाएंगे तथा मौखिक उच्चारण करवाया जाएगा तथा मौखिक परख भी लिया जाएगा।

11..परिशिष्ट : पूर्व परख शब्द उच्चारण

पूर्व परख शब्द

प्रश्न– 1 निम्नलिखित शब्दों को बोलकर लिखिए।

(1) टन	(2) मन	(3) तन	(4) सन	(5) जन
(1) नल	(2) नस	(3) नम	(4) मग	(5) नर

प्रश्न–2 वर्ण बोलकर बताए ? मौखिक प्रश्न पूछे ?

(1) क	ख	ग	घ	ड़
(2) त	थ	द	ध	न
(3) ट	ठ	ड	ढ	ण

प्रश्न–3 चित्र का मिलान वर्ण कीजिए।

(1) नल	जग का चित्र
(2) जग	नल का चित्र
(3) छाता	टब का चित्र
(4) टब	छाता का चित्र

श्रीमती शकुन्तला अध्यापक
रा•उ•मा•वि•भानिपुरा,सरदारशहर, चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

" विद्यार्थियों के द्वारा पुस्तकालय उपयोग को प्रोत्साहित करने का प्रयास "

अनुसंधान कर्ता

श्री जयप्रकाश अध्यापक

रा•उ•मा•वि•तेहनदेसर बीदासर ,चूरू

शोध का शीर्षक :

विद्यार्थियों के द्वारा पुस्तकालय उपयोग को प्रोत्साहित करने का प्रयास ।

1 प्रस्तावना, पृष्ठभूमि, औचित्य : पुस्तकालय वह स्थान है जहाँ विविध प्रकार के ज्ञान, सूचनाओं, स्रोतों, सेवाओं आदि का संग्रह रहता है। पुस्तकालय शब्द अंग्रेजी के लाइब्रेरी शब्द का हिन्दी रूपांतरण है लाइब्रेरी शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द लाइबर से हुई है जिसका अर्थ है पुस्तक। पुस्तकालय दो शब्दों से मिलकर बना है पुस्तक + आलय। पुस्तकालय उस स्थान को कहते हैं जहाँ पर अध्ययन सामग्री पुस्तकें, फिल्म पत्रिकाएँ मानचित्र, हस्तलिखित ग्रंथ, ग्रामोफोन रेकार्ड एवं अन्य पठनीय सामग्री संग्रहित रहती है और इस सामग्री की सुरक्षा की जाती है। पुस्तकों से भरी अलमारी अथवा विक्रेता पुस्तके पुस्तकालय नही होता क्योंकि वहाँ व्यवसायिक दृष्टि से रखी जाती है।

(1) पुस्तक उपयोग के लिए (2) प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले (3) प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले (4) पाठक का समय बचाए (5) पुस्तकालय प्रवर्धनशील संस्था है। अपने अनुभव के आधार पर मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण जगह है और मजे के लिए पढना एक महत्वपूर्ण गतिविधि है यह वह जगह हैं जहाँ पर हम ज्ञान का सृजन करते है।

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा (आर.टी.ई) अधिनियम 2009 का अधिकार 6 अप्रेल 2010 से लागू हुआ इस अधिनियम का परिशिष्ट बताता है कि अब यह कानूनी तौर पर अनिवार्य है कि सभी स्कूलों के पास एक सुसज्जित पुस्तकालय है। हालांकि यह भी पूरे तौर पर लागू नहीं हो पाया है।

विद्यार्थियों में शिक्षण में गुणवत्ता लाने के प्रयास के बावजूद अपेक्षित लाभ नहीं हो पाता है, शिक्षक द्वारा अच्छी प्रकार से पढ़ाये जाने के बावजूद भी बालक को अन्य संबंधित पुस्तकों का अध्ययन व स्वाध्याय करना चाहिए जिससे वे कठिन से कठिन विषय को भी आसानी से समझने में सफल हो सकते हैं सतत अध्ययन के लिए उसे पुस्तकें सफलता का मार्ग दिखाती हैं।

2 समस्या की उत्पत्ति : जब मैने देखा कि हमारे विद्यालय के पुस्तकालय का कभी ताला भी नहीं खुलता है अगर कभी भूल से खुलता भी है तो उसमें अध्यापक बैठकर गपशप मारते हैं तो फिर पुस्तकालय में पड़ी पुस्तकों का क्या फायदा वे भी धूल ही फांकती रहती हैं।

3. शोध समस्या का कारण व साक्ष्यः

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1	जब मैने कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थियों से पुस्तकालय के बारे में बातचीत की तो उन्हे पुस्तकालय के बारे में पता भी नहीं था ।	वार्तालाप द्वारा
2	अध्यापकों से बातचीत करने पर पता लगा की पुस्तकालय का उपयोग ही नहीं हो रहा है।	वार्तालाप द्वारा
3	छात्रों की अभ्यास पुस्तिका में सहायक पुस्तकों का नाम तक नहीं था	अभ्यास पुस्तिका

4 शोध के उद्देश्य :

1. विद्यार्थी द्वारा पुस्तकालय एवं वाचनालय का उपयोग नहीं करने के कारणों की जानकारी करना।
2. विद्यार्थी द्वारा पुस्तकालय एवं वाचनालय के उपयोग नहीं करने में अध्यापक की भूमिका की जानकारी करना।
3. विद्यार्थी द्वारा पुस्तकालय उपयोग हेतु किये जाने वाले अपेक्षित कार्यक्रमों की जानकारी करना।
4. पुस्तकालयाध्यक्ष के न होने पर छात्रों की शिक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी करना
5. खुला पुस्तकालय Open Library की सार्थकता की जानकारी करना।

5 शोध की परिकल्पना :

1. विद्यार्थी द्वारा पुस्तकाल एवं वाचनालय उपयोग नही करने के कारणों को चिन्हित किया जा सकता है।
2. विद्यार्थी द्वारा पुस्तकालय एवं वाचनालय के उपयोग नहीं करने में अध्यापक की भूमिका चिन्हित की जा सकती है।
3. विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को पुस्तकालय उपयोग हेतु विभिन्न कार्य आयोजित कर पुस्तकालय उपयोग को प्रोन्नत किया जा सकता है।
4. पुस्तकालयाध्यक्ष के न होने पर किसी अध्यापक को प्रभारी बनाकर उसे बच्चों के सहयोग के लिए प्रेरित किया जा सकता है।
5. सभी विद्यार्थी पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ें इसलिए खुला पुस्तकालय स्थापित किया जा सकता है।

6 सीमांकन : प्रस्तुत शोध रा.उ.मा.वि. तेहनदेसर (बीदासर) चूरू के पुस्तकालय तक सीमित है।

7 न्यादर्श :

क्र.सं.	कक्षा	छात्र	छात्रा	कुल
1	छः	26	16	42
2	सात	22	32	54
3	आठ	29	36	65
4	नौ	29	21	50
5	दस	40	43	83
6	ग्यारह	26	46	72
7	बारह	18	16	34
8	योग	190	210	400

8 शोध क्षेत्रः—

शैक्षिक क्षेत्र से सम्बन्धित (GSSS तेहनदेसर का पुस्तकालय)

9 शोध उपकरण एवं सांख्यिकी :

(1) दस्तावेज अवलोकनी
(2) अध्यापक साक्षात्कार
(3) विद्यार्थियों में पुस्तकालय एवं वाचनालय उपयोग प्रोन्नत हेतु कार्य।

10 कार्यः–

क्र. सं.	विवरण	शोध उपकरण	समयावधि
1	विद्यार्थी द्वारा पुस्तकालय/ वाचनालय उपयोग नही करना	दस्तावेज अवलोकन	2 सप्ताह
2	अध्यापक की भूमिका	अध्यापक साक्षात्कार	2 सप्ताह
3	वाचनालय व पुस्तकालय उपयोग को प्रोत्साहन	दस्तावेज अवलोकन	2 सप्ताह

शिक्षण में सहायक पुस्तकों के अध्ययन से आने वाला परिवर्तन प्रार्थना सभा कार्यक्रम में नित्य नवीन प्रार्थना व समाचार पाठन, श्लोक वाचन, कहानी कथन, प्रेरक प्रसंग आदि में पुस्तकालय की पुस्तकें पढने हेतु प्रेरित करना ।

4. प्रोजैक्ट कार्य :– अध्यापक कक्षा में अध्यापन के बाद ज्ञान में वृद्धि के लिए छात्रों से सन्दर्भ पुस्तकों का अध्ययन कर उन पुस्तकों का नाम व पृष्ठ संख्या आदि अपनी कार्यपुस्तिका में लिखने को प्रेरित करें।

5 डिस्प्ले बोर्ड : शिक्षक ने जो पुस्तक पढ़ी उसमें शिक्षक को क्या अच्छा लगा क्या बुरा लगा, अभिभावकों के लिए क्या, अध्यापक के लिए क्या, छात्र के लिए क्या लाभ इन सब को अध्यापक डिस्पले बोर्ड पर लिखें जिससे सभी के ज्ञान में वृद्धि हो। छात्र जो पुस्तकें पढ़ें उसमें छात्रों को जो पुस्तक अच्छी लगे उसका नाम उसके लेखक का नाम और उसमें क्या अच्छा लगा ये सब छात्र डिस्प्ले बोर्ड पर लिखें। छात्रों द्वारा सामाचार पत्र में आये नवीन शब्दों को लिखवाना। उनका अर्थ शब्दकोष में देखने को प्रेरित किया। इनके कार्यो से विद्यार्थियों में पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने में रूचि जागृत होने लगी। कक्षा VI से XII तक के विद्यार्थियों द्वारा प्रार्थना सभा पूर्व व आधी छुट्टी के समय, खाली कालांश के समय सदुपयोग के लिए खुला पुस्तकालय Open Library लगायी गई। पुस्तकालय की दीवारों पर रस्सियां बंधवाकर उन पर पुस्तकों को सुसज्जित किया गया। छात्रों के बैठने के लिए मेजों के चारों तरफ स्टूलें लगवाई गई। छात्रों द्वारा पुस्तकालय रजिस्टर का संधारण स्वयं ही किया जाने लगा। सभी विद्यार्थी खाली समय का सदुपयोग पुस्तकालय की ज्ञानवर्धक पुस्तके पढ़ने में करने लगे।

पूर्व में पुस्तकालय उपयोग

क्र.सं.	कक्षा	छात्र	छात्रा	योग
1	VI	01	02	03
2	VII	02	02	04
3	VIII	02	03	05
4	IX	04	04	08
5	X	04	05	09
6	XI	02	03	05
7	XII	02	04	06
8	कुल योग	19	23	42

बाद में पुस्तकालय उपयोग

क्र.सं.	कक्षा	छात्र	छात्रा	योग
1	VI	20	15	35
2	VII	20	25	45
3	VIII	25	30	55
4	IX	25	16	41
5	X	35	36	71
6	XI	21	39	90
7	XII	15	14	29
8	कुल योग	161	175	336

निष्कर्ष :

बच्चों के लिए नियमित रूप से बाल साहित्य के विकास की जरूरत है ऐसे शिक्षित लोगों की कमी है जो बच्चों के साथ सघन रूप से पुस्तकालय में काम कर सके।

बालकों में पुस्तकालय की पुस्तके पढने में रूचि जागृत हुई है।

बालक खाली कालांश का सदुपयोग करने लगे।

बालकों ने स्वाघ्याय करना शुरू कर दिया।

बालकों के अधिगम स्तर में सुधार आने लग गया।

बालकों में ज्यादा से ज्यादा पुस्तके पढ़ने की जिज्ञासा हुई।

बालकों में प्रतिस्पर्धा शुरू हो गयी ।

विद्यालय में शोध से पूर्व 10 प्रतिशत छात्र, 9.13 प्रतिशत छात्रा, 9.52 प्रतिशत कुल विद्यार्थी पुस्तकालय का उपयोग करते थे शोध के उपरान्त 84.73 प्रतिशत छात्र, 83.33 प्रतिशत छात्रा व 84 प्रतिशत कुल विद्यार्थियों ने पुस्तकालय का उपयोग करना शुरू कर दिया।

सुझाव :

1. किसी भी अध्यापक के अनुपस्थित रहने पर उस कालांश में छात्रों को पुस्तकालय में बैठाया जाये।
2. प्रत्येक पुस्तकालय में खुला पुस्तकालय "Open Library" हो।
3. पुस्तकालय रजिस्टर का संधारण छात्रों से ही करवाया जाये।
4. PTM में अभिभावकों को उनके छात्रों की प्रगति के साथ उनके द्वारा पढ़ी गई पुस्तकों के बारे में भी बताया जाये।

5- क्षा VI से XII तक के लिए सप्ताह में 2 कालांश पुस्तकालय के लिए रखे जायें।

विद्यार्थियों में शिक्षण गुणवत्ता हेतु पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ने हेतु रूचि जागृत करने की आवश्यक है

श्री जयप्रकाश अध्यापक
रा•उ•मा•वि• तेहनदेसर, बीदासर,चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

"छात्र/छात्राओं को पोशाक को नियमित रूप से पहनने के लिए प्रेरित करना"

अनुसंधान कर्ता

अमरसिंह व्याख्याता

रा.उ.मा.वि., लालासर,चूरू

1 शीर्षक :–

रा. उ. मा. वि., लालासर (चूरू) के कुछ छात्र/छात्राओं को पोशाक को नियमित रूप से पहनने के लिए प्रेरित करना।

2 शोध की पृष्ठभूमि

रा. उ. मा. वि., लालासर (चूरू) के कुछ छात्र/ छात्राओं द्वारा विद्यालय की पोशाक नियमित रूप से पहन कर नहीं आने से विद्यालयी परिवेश, अनुशासन, नियमितता व अस्वस्थता दिखाई देती है। विद्यालय के सभी विद्यार्थियों की एक रूपता दिखाई दे, इसके लिए इसकी आवश्यकता हुई तथा विद्यालय की गणवेश की महत्ता को बताना है।

3 समस्या सीमांकनः–

कक्षा –6 से 12 तक के समस्त विद्यार्थी

4 शोध के उद्देश्य :–

1. विद्यालय में विद्यालय गणवेश नहीं पहन कर आने वाले विद्यार्थियों को चिन्हित करना।
2. विद्यालय गणवेश नहीं पहन कर आने के कारणों का पता लगाना।
3. विद्यालय गणवेश नियमित रूप से पहन के आने के लिए प्रेरित करना।

5 क्षेत्र :–.

अन्य समस्या के क्षेत्र में रा. उ. मा. वि., लालासर (चूरू) मे विद्यार्थियों को गणवेश के महत्व को बताया तथा उनका प्रशासनिक स्तर पर मूल्यांकन करना।

6 उपकरण :–

नियमित रूप से विद्यालय गणवेश में आने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना तथा उनके नाम विद्यालय के डिस्पले बोर्ड पर चस्पा करना, पुरस्कार, डिस्पले बोर्ड

7 शोध समस्या के कारण व साक्ष्य :–

क्र.सं..	कारण	साक्ष्य
1	कुछ विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की पोषाक (गणवेश) नहीं पहन कर आना	प्रार्थना सभा व कक्षा कक्ष में अवलोकन करने पर पता लगा।
2	विद्यालय गणवेश नहीं पहन कर आने के कारण का पता लगाया	प्रार्थना सभा व कक्षा–कक्ष में अवलोकन कर पता लगाया
3	विद्यालय गणवेश पहन कर आने के लिए प्रेरित करना	प्रार्थना सभा व कक्षा–कक्षों में गणवेश की स्वच्छता व नियमित रूप से पहनने के लिए प्रोत्साहित करना

8 क्रियात्मक परिकल्पनाएं :–

1 विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय की गणवेश को नियमित रूप से पहन कर आने की अभिरूचि पैदा करना।

2 विद्यालय की गणवेश की स्वच्छता पर ध्यान देना।

3 विद्यार्थियों में विद्यालय की गणवेश पहन कर आने के प्रति रूचि पैदा होगी।

9 क्रियात्मक परिकल्पना के परिक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र. सं.	कार्य योजना बिन्दु	कार्य जो करना है	साधन/उपकरण	समयावधि
1	पूर्व परीक्षण/ वर्तमान स्थिति का आंकलन	प्रार्थना सभा में प्रत्येक छात्र/छात्रा की गणवेश का अवलोकन करना	व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण करना	6 दिन
2	निदानात्मक कार्य	प्रार्थना सभा में विद्यालय गणवेश के महत्व बताना, गणवेश स्वच्छता के बारे में बताना, गणवेश से विद्यालय में अनुशासन के महत्व बताना	प्रार्थना सभा कक्षा कक्ष में निरीक्षण अवलोकन करना	6 दिन
3	उपचारात्मक कार्य	प्रार्थना सभा में प्रत्येक विद्यार्थियो की गणवेश का अवलोकना गणवेश की स्वच्छता से होने वाले लाभ/फायदों के बारे में बताना नियमित रूप से स्वच्छगणवेश पहन कर आने वाले विद्यार्थियों को चिन्हित कर पुरस्कृत करना।	प्रार्थना सभा कक्षा कक्ष में निरीक्षण अवलोकन करना	6 दिन

4 पश्च परीक्षण/ परिवर्तन आंकलन

प्रार्थना सभा व कक्षा–कक्षों में सामूहिक रूप से विद्यार्थियों की पोशाक का अवलोकन	समस्त विद्यार्थी विद्यालय गणवेश नियमित रूप से पहनने लगे।

5 दत्त विश्लेषण व सांख्यिकी :–

अनुसंधान से पूर्व की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	छात्र	छात्रा	योग
1 विद्यालय गणवेश में आने वाला की सख्यां	131	153	284
2 विद्यालय गणवेश में नही आने वालों की संख्या	22	12	34

अनुसंधान से पश्चात की स्थिति के आधार पर

वर्गीकरण	छात्र	छात्रा	योग
1 विद्यालय गणवेश में आने वाला की संख्या	151	164	315
2 विद्यालय गणवेश में नही आने वालों की संख्या	02	01	03

10 क्रियात्मक परिकल्पना की स्वीकृति अथवा अस्वीकृति :–

1. विद्यालय के समस्त छात्र/छात्राऐं नियमित रूप से विद्यालय की गणवेश पहन कर आने लगे। गणवेश पहनने को स्वीकार लिया।
2. विद्यालय के समस्त छात्र/छात्राऐं विद्यालय गणवेश को स्वच्छ रखने लगे। गणवेश की सफाई व सुन्दरता पर ध्यान देने लगे।

3. विद्यालय के समस्त छात्र/छात्राओं में स्वच्छ व सुन्दर रूप से नियमित रूप से विद्यालय गणवेश पहन कर आने की प्रतिस्पर्धा पैदा होने लगी।

11 प्रतिवेदन लेखन :– अनुसंधान के पूर्व व अनुसंधान के पश्चात की स्थिति के आधार पर विश्लेषण किया गया है कि–

1 प्रार्थना सभा में समस्त विद्यार्थियों की गणवेश का सामूहिक रूप से अवलोकन करने पर अवगत हुआ कि समस्त छात्र/छात्राएं विद्यालय गणवेश में नियमित रुप से आने लगे।

2 विद्यालय की गणवेश की स्वच्छता व सुन्दरता पर विशेष घ्यान देने लगे।

3 विद्यालय में विद्यार्थियों में विद्यालय गणवेश स्वच्छ, सुन्दर व नियमित रूप से पहनकर आने की प्रतिस्पर्धा व अभिरूचि जागृत हुई।

7 निष्कर्ष :–

1. विद्यालय के समस्त विद्यार्थी नियमिति रूप से विद्यालय की गणवेश को पहन कर आने लगे।
2. गन्दी व अस्वच्छ गणवेश पहन कर आने से होने वाले चर्म रोग तथा तन में बदबू आने पर गणवेश की सफाई व स्वच्छता का ध्यान रखने लगे।
3. विद्यालय में समस्त विद्यार्थियों में विद्यालय गणवेश में आने की प्रतिस्पर्द्धा जागृत हुई।

9 सुझाव :– सभी विद्यालय (सरकारी/ निजि) में विद्यालय गणवेश के नियमित पहनकर आने से होने वाले फायदे अनुशासन, स्वच्छता व साफ–सफाई के प्रति छात्र–छात्राऐं जागृत हो सकेंगे तथा विद्यालय परिसर में सफाई का माहौल बना रहेगा।

अमरसिंह व्याख्याता
रा.उ.मा.वि., लालासर

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

" विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि को दूर करने का प्रयास "

अनुसंधान कर्ता

श्रीमती रचना अध्यापक

रा•उ•प्रा•वि•खण्डवा पट्टा पीथीसर ,चूरू

1. शोध का शीर्षक :–
   रा. उ. प्रा. वि., खण्डवा पट्टा, पीथीसर (चूरू) के कक्षा–5 के विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि को दूर करने का प्रयास।

2. उद्देश्य :–
   बच्चों में अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि पैदा करना विद्यार्थियों का पुस्तकों के प्रति ध्यान आकर्षित करना व गुणवत्ता को बढ़ाना।

3. परिकल्पना का निर्धारण :–
   विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति रूचि जागृत करना व अंग्रेजी बोलने व पढ़ने को प्रेरित करना। विद्यार्थी गृहकार्य व कक्षा–कक्ष में रूचि लेंगे। बच्चों को पढ़ने लिखने में सरलता होगी तथा विद्यार्थी को विषय रूचिकर लगेगा।

4. क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र.सं	विवरण	कार्य विवरण	साधन
1	बच्चों को चिन्हित करना	अवलोकन द्वारा छात्रों का वर्गीकरण करना, गृहकार्य जांच, बच्चों की अरूचि का अवलोकन करना।	कक्षा–कक्ष में शिक्षण में चार्ट का प्रयोग
2	सहायक सामग्री का प्रयोग	चार्ट, चित्रों द्वारा रोचकता पूर्ण अभ्यास करवाना	अन्त्याक्षरी का आयोजन
3	रूचि पैदा करना	अंग्रेजी शब्दों का व्यवहार व दैनिक जीवन में उपयोग लाना।	बच्चों द्वारा बोर्ड पर लिखवाना
4	प्रतियोगी भावना जागृत करना	अंग्रेजी की अन्त्याक्षरी का आयोजन करना	पोस्टर

5. दत्त संकलन :–
   प्रस्तुत शोधकर्ता के अन्तर्गत दत्त संकलन किया जाएगा।
6. सीमांकन
   कक्षा–5 के विद्यार्थी।
7. न्यायदर्श :–
   कक्षा – 5 के 22 विद्यार्थी 10 लड़के 12 लड़कियां।
8. विधि :–
   प्रश्नोत्तर विधि, साक्षात्कार
9. उपकरण :–
   प्रश्नावली

10 दत्त विश्लेषण की व्याख्या :–

प्रथम चरण में विद्यार्थियों में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि के कारणों का पता लगाया गया। अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि के कारणों का पता लगाने के पश्चात विद्यार्थियों को विषय के प्रति प्रोत्साहित किया गया। उपर्युक्त विषय विधि का प्रयोग किया गया, अभिभावकों को उचित निर्देश दिये। जिसमें विद्यार्थियों को गृहकार्य करने के लिए अभिभावक को उचित निर्देश दिये। द्वितीय चरण में प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से निम्न आंकड़े प्राप्त होते हैं कि–

1. शत–प्रतिशत अभिभावकों को अंग्रेजी विषय की उपयोगिता का ज्ञान है।
2. 60 प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों की समस्या को समझ कर उनकी सहायता करने का प्रयास करते हैं जबकि 40 प्रतिशत ऐसे अभिभावक हैं जो सहायता करने में असमर्थ है।
3. विद्यार्थी को घरेलू कार्य में व्यस्त रखा जाता है।
4. समय व वातावरण की कमी होना।

11 निष्कर्ष व उपयोगिताः–

इस विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि विद्यार्थी में अंग्रेजी विषय के प्रति अरूचि के लिए अनेक तत्व प्रभावित करते हैं जो निम्न है।

1. अभिभावकों की एस.एम.सी. मिटिंग में कम भागीदारी।
2. अभिभावकों को अंग्रेजी के प्रति उदासीनता व सामान्य ज्ञान की कमी होना।
3. सहायक सामग्री की कमी होना व सकारात्मक वातावरण की कमी, उपयोगिता में इससे बच्चों की रूचि बढ़ेगी व एस.एम.सी. में उपस्थिति देंगे व नई तकनीकी व नवाचारों का प्रयोग करना होगा।

श्रीमती रचना, अध्यापिका

रा उ प्रा वि खण्डवा पट्टा ,पीथीसर,चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

" रा.मा. वि. रायपुरिया में विद्यालय परिसर सौन्दर्यकरण करने का प्रयास "

अनुसंधान कर्ता

श्री ओम प्रकाश भाकर अध्यापक रा•मा•वि•रायपुरिया, चूरू, जिला–चूरू

शोध का शीर्षक :

रा.मा. वि. रायपुरिया में विद्यालय परिसर सौन्दर्यकरण करने का प्रयास :

1 प्रस्तावना :

विद्यालय में पहुंचते ही सर्वप्रथम विद्यालय का बाह्य सौन्दर्यकरण प्रभावित करता है फूलदार पौधे मन को प्रसन्न कर देते है लेकिन अपने विद्यालय में मैने पाया कि परिसर में फूलों के पौधे नहीं हैं। कारण जानने पर पाया कि विद्यालय की चार दीवारी टुटी हुई है जिससे विद्यालय बन्द होने के बाद आवारा पशु व विद्यालय प्रांगण में खेलने वाले बच्चे पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं इन सब समस्याओं के होते हुये शौध कर्ता कोविड–19 के दौरान समय का सदुपयोग करने के लिए शौध सम्पन्न किया गया।

2 आवश्यकता व औचित्य :

इस शोध की आवश्यकता इसलिये हुई कि कई समस्या के होते हुए भी उनका निराकरण करते हुये विद्यालय परिसर को स्वच्छ व आकर्षक बनाया जा सके जिससे बच्चे प्रसन्न मन से विद्यालय में प्रवेश करें तथा अपनी पढ़ाई में मन लगा सकें। और कोविड–19 के कारण जहाँ बच्चे विद्यालय नहीं आते स्टाफ समय का सदुपयोग हो इसलिये विद्यालय परिसर के सौन्दर्यकरण की आवश्यकता महसूस हुई है।

3 उद्देश्य

(I) विद्यालय परिसर को सुन्दर बनाना
(II) बच्चों में पर्यावरण को सुन्दर बनाने हेतु रूचि उत्पन्न करना
(III) बच्चों में जिम्मेदारी का भाव उत्पन्न करना
(IV) समूह में कार्य करने की भावना का विकास करना

4 समस्या कथन :–

शोधकर्ता द्वारा ली गई समस्या का कथन था रा.मा.वि. रायपुरिया (चूरू) में सौन्दर्यकरण के लिये किए गये कार्यो की प्रभाविकता का अध्ययन।

5 परिकल्पना :–

फूलदार पौधों की क्यारियां बनायी जायेगी। क्यारियों के किनारे कलात्मक ढंग से ईंटे लगायी जायेगी तथा उनको रंगा जायेगा,दूब लगाना,सुरक्षा के लिए कंटीले तार लगाये जायेंगे।

6 क्रियात्मक शोध का सीमांकन :

रा.मा.वि. रायपुरिया (चूरू) के सौन्दर्यकरण हेतु किया गया अनेक समस्याओं के होते हुये भी विद्यालय के सौन्दर्य वृद्धि हेतु किये गये कार्य काफी हद तक सफल रहे।

7 न्यादर्श :

इस क्रियातमक शोध का न्यादर्श रा.मा.वि. रायपुरिया तहसील चूरू जिला चूरू था

8 उपकरण :

इस क्रियात्मक शोध के लिये निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरण प्रयुक्त किये गये थे ।

1. अवलोकन प्रपत्र (शोध से पूर्व)
2. अवलोकन प्रपत्र (शोध के पश्चात्)

कार्ययोजना का विकास एवं क्रियान्वयन :– शोध कर्ता ने रा.मा.वि. रायपुरिया (चूरू) में पाया कि विद्यालय का बाह्य स्वरूप नीरस था कारण जानने पर कि विद्यालय की चार दीवारी टूटी हुई थी जिसके कारण पशु व अन्य लोगों द्वारा पेड़–पौधों को नुकसान पहुंचाया जाता है शोधकर्ता द्वारा रा.मा.वि. रायपुरिया का सौन्दर्यीकरण न होने की समस्या को चिन्हित करते करते हुए विद्यालय शोध हेतु निमन योजना का निर्माण किया गया ।

क्र.सं.	क्रियाकलाप	समय
1	समस्या का चिह्नीकरण	1 दिन
2	पौधों की क्यारियों का निर्माण	4 दिन
3	क्यारियों के किनारे ईंट लगाना व रंग करना	4 दिन
4	पेडों पर समोसम व चूना लगाना	2 दिन
5	पौधे लगाना	5 दिन
6	दूब लगाना	5 दिन
7	कंटीले तार व पट्टी लगाना	1 दिन
योग		22 दिन

शोधकर्ता ने कोविड–19 काल में शिक्षकों के साथ मिलकर जन सहयोग व स्टॉफ सहयोग से खाद व पौधे, कंटिलेतार व पट्टी क्रय की गई।

गतिविधि :

(I) सर्वप्रथम स्टाफ के साथ मिलकर समस्या को चिह्नित किया

(II) दानदाताओं एवं स्टाफ द्वारा मिलकर ईंट, तार, पट्टी, पौधे खाद खरीदने के लिये राशि एकत्रित की गई।

(III) स्टाफ द्वारा मिलकर क्यारियां तैयार की गई।

(IV) पट्टी चार–दीवारी की जगह तार व जाल लगवाया गया।

(V) बगीचा तैयार करने के लिये आवश्यक सामग्री तैयार की गई

(VI) शिक्षकों के सहयोग से पौधे व दूब लगाई गई।

(VII) पेड़ो के समोसम करवाया गई

(VIII) बगीचे के चारो ओर जाली व तार लगवाये गये ।

आंकड़ो का विश्लेषण व व्याख्याः– आंकाड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि विद्यालय की पूर्व स्थिति में परिसर का वातावरण नीरस प्रतीत होता था लेकिन क्रियात्मक शोध के पश्चात् विद्यालय परिसर सुन्दर व मनमोहक बन गया।

निष्कर्षः–

शोधकर्ता द्वारा क्रियात्मक शोध के क्रियान्वयन से स्पष्ट है कि समस्याओं को दरकिनार कर कुछ किया जाये तो यह जरूर बेहतर परिणाम के साथ पूर्ण होता है शिक्षको ने बड़े अच्छे ढंग से सहयोगी की भूमिका निभाई लॉकडाउन के दौरान समय का भी सदुपयोग हो गया। बच्चें में भी आपसी सहयोग की भावना का विकास हुआ है अभिभावकों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा हुई है। वे अपने घरों में पेड़ पौधे लगाने के लिये प्रेरित हुये है। विद्यार्थी भी गांव के सार्वजनिक स्थानों का सौन्दर्यकरण करने के प्रयास करने लगे है।

श्री ओम प्रकाश भाकर अध्यापक

रा•मा•वि•रायपुरिया ,चुरु,जिला–चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

" अध्यापको में दैनन्दिनी प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने का प्रयास"

अनुसंधान कर्ता

जगवीर सिंह पूनिया अध्यापक

रा•उ•प्रा•वि•मघाउ,राजगढ चूरू

शोध का शिर्षक

अध्यापको में दैनन्दिनी प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने का प्रयास

यह अनुभव किया गया है कि विद्यालय में अध्यापक दैनिक डायरी का संधारण अध्यापको द्वारा नहीं किया जा रहा है। जिसके कारण पाठ्यक्रम समय पर पूर्ण नहीं होता है तथा परीक्षा परिणाम न्यून रहता है।

उद्देश्यः

1. अध्यापको को अध्यापक दैनिक डायरी संधारण हेतु जागरूक करना
2. अध्यापक दैनिक डायरी संधारण स्वयं पहल कर प्रेरित करना।
3. अध्यापकों के शैक्षणिक स्तर को गुणात्मक उन्नत करना।
4. अध्यापकों को अध्यापक डायरी का संधारण का महत्व समझाना।

समस्या :

रा.उ.प्रा.वि.मघाउ राजगढ़, चूरू के अध्यापकों के द्वारा अध्यापक दैनिक डायरी संधारण की समस्या।

समस्या का सीमांकन : राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय मघाऊ, चूरू के अध्यापकों द्वारा अध्यापक दैनिक डायरी संधारण की समस्या को दूर करने का प्रयास करना।

संभावित कारण :

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1	अध्यापको द्वारा दैनिक अध्यापक डायरी संधारण अवहेलना	अध्यापक डायरी अवलोकन
2	अध्यापकों द्वारा अध्यापक दैनिक डायरी संधारण में अनियमितता/लापरवाही	पाठ्यक्रम पाठ योजना
3	अध्यापक द्वारा मूल्यांकन करते समय त्रुटियों की अवहेलना	मूल्यांकित अभ्यास पुस्तिका

समस्या संबंधी कार्यों का विश्लेषण निम्न तालिका के माध्यम से किया गया है–

क्रियात्मक परिकल्पनाः

1. अध्यापकों को अध्यापक दैनिक डायरी संधारण हेतु स्वयं पहल कर प्रेरित करना।
2. अध्यापकों को दैनिक अध्यापक डायरी संधारण हेतु साप्ताहिक रिपोर्ट हेतु कार्यगोष्ठी करना।
3. अध्यापकों को अध्यापक दैनिक डायरी संधारण पर पुरस्कार देकर प्रोत्साहित करना।

क्रियात्मक अभिकल्प :–

क्र. सं	क्रिया	विधि	सामग्री	अवधि
1	अध्यापक दैनिक डायरी में संधारित किए जाने वाले कार्यों की सूची तैयार करना	साक्षात्कार विधि	पाठ्यपुस्तक मे	1 सप्ताह
2	प्रतिदिन अध्यापक दैनिक डायरी का मूल्यांकन	सहयोगी शिक्षकों से विचार	अध्यापक डायरी	2 सप्ताह
3	अध्यापक के कालांशो के पाठ्यक्रम की प्रगति रिपोर्ट	निरीक्षण	अध्यापकपुस्तिका मुल्यांकन पुस्तिका	2 माह

परिणाम :–

प्रथम परिकल्पना में वर्णित सुझावों के क्रियान्वयन से अध्यापकों द्वारा अध्यापक दैनिक डायरी संधारण किया जाने लगा। अतः प्रथम परिकल्पना स्वीकार्य है।

सामान्य निष्कर्ष : क्रियात्मक अनुसंधान के उपर्युक्त वर्णित सोपानों के अनुसरण से प्राप्त परिणामों के अवलोकन से स्प्ष्ट है कि प्रथम परिकल्पना में प्रस्तुत सुझावों को लागू करने से अध्यापकों द्वारा अध्यापक दैनिक डायरी संधारण की समस्या को दूर करने के लिए प्रभावी रूप से स्वीकार किया जा सकता है। इससे न केवल अध्यापकों का शैक्षणिक गुणात्मक सुधार होगा बल्कि विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में गुणात्मक सुधार होगा।

जगवीर सिंह पूनिया अध्यापक
रा•उ•प्रा•वि•मघाउ,राजगढ चूरू

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चूरू

क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन सत्र –2020–21

अनुसंधान का शीर्षक

''विद्यार्थियों को विज्ञान विषय में चित्र स्वच्छ एवं स्पष्ट बनाने का एक प्रयास'

अनुसंधान कर्ता

श्री मुकेश चंद मीना व•अ• रा•उ•मा•वि•टिडियासर,रतनगढ चूरू

1 शीर्षक :–

''विद्यार्थियों को विज्ञान विषय में चित्र स्वच्छ एवं स्पष्ट बनाने का एक प्रयास'

2 समस्या की पृष्ठभूमि

आवश्यकता :– बालक शुरूआत से ही बार–बार चित्र को सुन्दर व स्पष्ट तरीके से नहीं बना पा रहे थे बहुत से चित्रों को मैंने जब देखा तो वे कुछ प्रयास नहीं कर पा रहे थे।

महत्व :– उस प्रयास से बच्चे चित्र सुन्दर बना पायेंगे यदि बार–बार अभ्यास नहीं किया तो उनकी गलतियां बार–बार आयेंगी।

यदि ऐसा प्रयास किया जाए तो छात्र चित्रों को न केवल सुन्दर ही बनायेंगे बल्कि स्पष्ट भी बना पायेंगे। विज्ञान के विषय में चित्रों का अपना महत्व है।

3 समस्या का सीमांकन :–

कक्षा– 6 के छात्र

4 शोध के उद्देश्य

1. बालकों को सुन्दर स्पष्ट चित्रों का अभ्यास करवाना।
2 चित्रों के माध्यम से सुलेख भी अच्छा लिख सकते हैं।
3. चित्रों के साथ–साथ समझ व अनुशासन में भी सुधार होगा।
4.' इस प्रयास से परीक्षा परिणाम की गुणवत्ता में सुधार होगा।
5 बालकों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होगा।
6 अपनी गलतियों को सुधारने के लिए बार–बार चित्र बनायेंगे।
7 चित्रों के साथ–साथ विषयवस्तु की समझ बनायेंगे।

5 क्षेत्र :–

चिद्यालय में छात्रों की चित्रों की समझ व विषयवस्तु स्पष्ट होना।

6 शोध के कारण व साक्ष्य :–

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1	छात्रों द्वारा अस्पष्ट चित्र बनाना	अभ्यास पुस्तिका
2	छात्रों द्वारा चित्र सही नहीं बनाने के कारण विषय वस्तु की समझ स्पष्ट नही होंना	अन्य विषय जैसे गणित में रेखा गणित संबन्धी
3	इस प्रवृत्ति से अशुद्ध चित्र बनाना	कक्षा–कक्ष का अवलोकन

7 क्रियात्मक परिकल्पना :–

इससे सभी बालकों को चित्रों की समझ में सुधार होगा जिससे इनकी ि ाक्षा में गुणात्मक सुधार होगा तथा छात्रों की विज्ञान विषय की पकड़ चित्रों के माध्यम से अच्छी होगी।

7. क्रियात्मक परिकल्पना के परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र.सं.	कार्य योजना बिन्दु	कार्य जो करना है	साधन	समयावधि
1	कार्य पुस्तिका की जांच	सुन्दर चित्रों के लिए सरल चित्र देना	कॉपी, पेंसिल रबर, स्केल	5 दिन
2	कार्य पुस्तिका की जांच	गणित की कार्य पुस्तिका देखना	कॉपी, पेंसिल रबर, स्केल	2 दिन

8. दत्त विश्लेषण :–

कुल छात्र संख्या 15 प्राप्तांक – 20

प्राप्तांक :– 7, 5, 8, 11, 12 15, 17, 18, 20, 20, 19, 13, 15

प्राप्तांक	मिलान चिन्ह	बारम्बारता
0–5	1	1
6–10	11	2
11–15	11111	5
16–20	11111 11	7
योग		15

9. शोध विश्लेषण :–

इस शोध से बालकों में निम्न सुधार होगा।

1. बालक चित्र सुधार का अभ्यास करवाने से वे चित्रों को सुन्दर बनायेंगे।
2. स्पष्ट चित्र से विषय वस्तु की समझ, अध्ययन में गुणात्मक सुधार होगा।
3. बालकों में विज्ञान के साथ–साथ गणित विषय में क्षेत्रमिति को भी समझ लेगा।
4. चित्रों के माध्यम से विषय वस्तु की समझ व स्थाई पकड़ मजबूत होगी।
5. बालकों में रंगोली, पेन्टिग तथा व्यावहारिक कार्य में सुन्दर चित्र बनायेंगे।
6. बालकों में अध्ययन की रूचि जागृत होगी।

10. सुझाव :–

1 यदि इस प्रकार के शोध द्वारा छात्र विज्ञान जैसे विषय को समझकर दैनिक जीवन में गुणात्मक सुधार कर समझ स्पष्ट कर सकेंगे।

2 बालकों में आत्म निर्भरता का विकास होगा।

3 सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ अन्य कौशलों का भी विकास होगा।

श्री मुकेश चंद मीना व•अ•
रा•उ•मा•वि•टिडियासर, रतनगढ, चूरू

1 शीर्षक :–

''रा. उ. मा. वि., गौरीसर के कक्षा–5 के विद्यार्थियों को English में Pure Pronunciation करने की समस्या के कारण व निराकरण का एक प्रयास''

2 पृष्ठभूमि की आवश्यकता एवं महत्व :–

मानव ज्ञान के विकास के लिए अनुसंधान आवश्यक है तभी जीवन का विकास संभव है। जब शिक्षक अपनी व्यक्तिगत समस्या को स्वयं वैज्ञानिक ढ़ंग से हल करता है विषय विशेष से सबन्धित अनभिज्ञताओं, उलझनों, प्रश्नों का हल ढूँढने की आकांक्षा रखता है। अपने निर्णय और क्रियाओं में निर्देशन सुधार और मूल्यांकन करता है। मुझे इसकी आवश्यकता तब महसूस हुई जब मैं कक्षा–5 में English Subject का शिक्षण कार्य करवा रही थी। तब मैंने पाया अधिकांश छात्र रूटीन शब्दों का शुद्ध उच्चारण Pure Pronunciation नहीं कर पा रहे थे। Pronounce की समस्या मेरे सामने एक चुनौती थी। मैं जब Paragraph reading करवा रही थी तब मैने महसूस किया अधिकांश बच्चें Daily रूटीन शब्द का शुद्ध उचचारण नही कर पा रहे थे। (For ex. Comfortable, Wednesday, Engineer, Break fast) इस प्रकार के शब्दों का उच्चारण नहीं कर पा रहे है। इस समस्या से निजात पाने के लिए मैनें कक्षा–कक्ष में ज्यादा से ज्यादा Daily रूटीन Word को English में बोलने का उपयोग शुरू किया। कक्षा कक्ष के अन्दर बच्चों को ज्यादा से ज्यादा अंग्रेजी में बोलने का Confidece पैदा किया। Sound words Chart बनाकर कक्षा में चिपकाने व उसका अभ्यास करने के लिए प्रत्येक बच्चे को प्रेरित किया। बच्चों की झिझक को दूर करने के लिए के लिए Daily – Good morning, Good evening, Standup, Sitdown जैसे शब्दों का प्रयोग शुरू किया। कक्षा–कक्ष के अन्दर Peer group बनाकर Activity based work करवाया। मैंने ऐसे वाक्य चुने जो बच्चों ने पहले कभी नहीं सुने थे।

1. I want you to make line 2. Can you make a big Circle\
2. I am Sorry / Thankyou इस तरह मैंने कक्षा वातावरण तैयार किया और मुझे अच्छी सफलता भी प्राप्त हुई। बच्चे अब आराम से बिना झिझक रूटीन शब्दों का सही उच्चारण करने लगे। English में Improve भी हुआ।

3 सीमांकन :–

रा. उ. मा. वि, कक्षा–5 के कुल 38 विद्यार्थियों पर किया गया है।

4 शोध के उद्देश्य :–

1. बच्चे कक्षा कक्ष में words का सही उच्चारण करने का प्रयास करेंगे।
2. Pronounce का सही उच्चारण करने पर अंग्रेजी बोलने में Confidence पैदा हुआ।

5 क्षेत्र :

शैक्षणिक

6 शोध के कारण व साक्ष्य :–

क्र.सं.	कारण	साक्ष्य
1	जब कक्षा में बच्चें से Paragraph Reading करवा रही थी तो पाया कि कुछ बच्चे hard words सही उच्चारण नहीं कर पा रहे थे।	अवलोकन
2	विद्यालय के अन्य शिक्षकों ने भी अपनी राय दी कि कुछ बच्चे उनके शिक्षण के दौरान भी इस तरह के उच्चारण नहीं कर पाते हैं। गणित में भी संख्याओं को शब्दों में शुद्ध नहीं बोल पाते हैं।	अन्य विषय के शिक्षकों से चर्चा/ वार्तालाप

7 परिकल्पना :–

1. शोध के द्वारा यह परिकल्पना की जाती है कि अंग्रेजी भाषा का सही उच्चारण विद्यार्थी कर सकें।
2. सही उच्चारण करने के लिए बार–बार Repeat करने की प्रक्रिया का दोहरान।

8 क्रियात्मक के परीक्षण हेतु कार्य योजना :–

क्र.सं.	कार्य योजना	कार्य जो करना है	साधन/ उपकरण	समयावधि
1	Alphabet Letter	Vowel Sound,Chart Words Practice	a/aa/e/i/eeu/o/oo/ue/ai/a/ai/ang/an	6
2	Activity	work bookActivity based Rhyming words	text book Name, Game,Fame	4
		Daily Routine Words practice	look, book cook,Chart	10

9 दत्त विश्लेषण :–

कक्षा– 6 के 38 विद्यार्थियों के आंकड़े इकट्ठे किये गये।

10 विश्लेषण :–

आंकड़ों के आधार पर दत्त विश्लेषण किया गया जिसमें पाया की जहां कार्य योजना क्रियान्वयन से पूर्व अशुद्ध उच्चारण का स्तर 80 प्रतिशत था जो पश्च परीक्षण में घटकर केवल 30 प्रतिशत रह गया। अतः अनुसंधान स्वीकार्य है।

श्रीमती भंवरी तेतरवाल अध्यापक
रा•उ•मा•वि•गौरीसर रतनगढ चूरू